पं0 दीनदयाल उपाध्याय एवं उनके विचार

डॉ. दिनेश, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र,
डॉ. हरीश चंद्र जोशी, असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय, कोटाबाग, नैनीताल, उत्तराखण्ड

विश्व में अनेक ऐसे चिन्तक एवं समाज सुधारक हुए हैं। युगों–युगों तक जिन्हें स्मरण किया जाता रहा है। भारत में भी ऐसे कई महान व्यक्तित्व हुए हैं। जिन्हें आज भी याद किया जाता है। इन्हीं में से एक हैं, पं0 दीनदयाल उपाध्याय।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 को जयपुर जिले के धानक्या ग्राम में हुआ था। इनके पिता सहायक स्टेशन मास्टर थे। इनकी अल्पायु में ही पिता एवं माता के निधन के कारण इनका बचपन अपने ननिहाल में हुआ। बाल्यावस्था से ही वे कुशाग्र बुद्धि के थे।

सरल एवं सौम्य स्वभाव के पं0 दीनदयाल ने अध्ययन के पश्चात नौकरी के स्थान पर समाज सेवा का मार्ग चुना। छात्र जीवन से ही वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सक्रिय कार्यकर्ता हो गये थे। कालेज के उपरान्त ही वे इसके प्रचारक भी बन गये। सन् 1951 में अखिल भारतीय जनसंघ का निर्माण होने के पश्चात उन्हें इसका संगठन मंत्री एवं 1953 में महामन्त्री का दायित्व सौंपा गया। 15 वर्ष तक महामन्त्री पद पर कार्य करने के पश्चात दिसम्बर 1967 में आपको अखिल भारतीय जनसंघ का अध्यक्ष बनाया गया। 11 फरवरी सन् 1968 की रात रेल यात्रा के दौरान उनकी हत्या कर दी गई जो एक रहस्य ही बना है।

दीनदयाल उपाध्याय मात्र राजनेता ही नहीं थे वरन् एक चिंतक, विचारक एवं लेखक भी थे। उन्होंने अपनी सुख सुविधाओं को त्याग कर अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया था। राष्ट्र के विकास हेतु वे निरन्तर प्रयत्नशील रहे एवं लोगों को एक सूत्र में बांधने के लिये लम्बी यात्रायें करते रहे।

निशुल्क शिक्षा एवं चिकित्सा जैसी मूलभूत सुविधाओं को वे आम जनमानस के लिये आवश्यक मानते थे। समाज के हर वर्ग के विकास की बात करते वे कहते थे कि जिस प्रकार भवन निर्माण में पहले छत नहीं बनायी जा सकती। भवन की नींव से ही उसको प्रारम्भ करना होता है। उसी प्रकार समाज के निर्माण में भी सबसे निचले पिछडे वर्ग से ही प्रयास करने होंगे। हर खेत को पानी हर हाथ को काम का विचार भी दीनदयाल उपाध्याय का ही दिया हुआ है। परन्तु आज भी खेतों में पर्याप्त पानी न हाने के कारण देश में खेती की स्थिति अच्छी नहीं है। हर वर्ष कितने ही किसानों द्वारा आत्महत्या की जा रही है। दूसरी ओर हर हाथ को काम न मिल पाने के कारण गॉवों से पलायन आज भी जारी है।

दीनदयाल उपाध्याय का व्यक्तित्व व कृतित्व बहुआयामी है। समाजसेवियों एवं राजनीतिज्ञों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिये। युवा पीढी को उनके विचारों एवं उनके द्वारा किये गये कार्यों से प्रेरणा लेकर अपने जीवन का लक्ष्य बनाना चाहियैं।

दीनदयाल उपाध्याय उपभोगवाद, मार्क्सवाद एवं वामपंथी वाद के घोर विरोधी थे। उनके जीवन का दर्शन सादा जीवन उच्च विचार पर आधारित था। समाज में बुजुर्गों का सम्मान हो, नैतिकता का बोलबाला हो, युवा पीढी जल जंगल एवं जमीन के महत्व को न केवल समझे वरन् अपने जीवन में आत्मसात भी करे यह उनका प्रयास रहा। वे परम्परागत् कृषि उत्पादों के शत् प्रतिशत उपभोग के पक्षधर थे। उनका मानना था कि परहित में ही स्वहित छिपा है।

निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि पं0 दीनदयाल उपाध्याय को उन भारतीय चिंतकों, विचारों, समाजशास्त्रीयों एवं लेखकों में एक कहा जा सकता है, जिनके विचारों ने देश को एक नई दिशा प्रदान की वर्तमान में भी उनके चिंतन एवं विचार सटीक बैठते हैं। आज यदि उनके विचारों एवं चिंतन पर विचार कर उन्हें क्रियान्वित किया जाये तो सार्थक सिद्ध होंगे।

संदर्भ सूची

1. 1958 भारतीय अर्थ नीति– विकास एवं दिशा राष्ट्र धर्म प्रकाशन लि0, बॉसमण्डी, लखनऊ

2. 1968 पॉलीटिकल डायरी, जैको पब्लिकेशन हाउस, बम्बई।

3. 2007 राष्ट्र चिन्तन, आष्ठम संस्करण, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ